IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 1, September 2022

स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी के विचारों में समानता

डॉ सुरेंद्र सिह
एसोसिएट प्रोफेसर
राज्य समन्वयक, आयुक्तलय कॉलेज शिक्षा, जयपुर

स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी दोनों आधुनिक भारत के आकाश में जगमगाते हुए ऐसे दो नक्षत्र है। जिसके प्रकाश में भारतीयता आगे की यात्रा तय करती है। इन दोनों ने रास्ते का जो नक्शा निर्मित किया उसी पर चलकर आधुनिक भारत का निर्माण हो सका। इस मायने में ये दोनों आधुनिक भारत के निर्माता है। यघपि उनकी परिकल्पित योजना के अनुसार भारत निर्मित नहीं हो पाया लेकिन आज भारत जिस रूप में जैसा है उसका सारा श्रेय इन्ही दोनों को जाता है। आज भारत में यदि सर उठाकर खड़े होने का हौसला है और भारतवासी स्वतंत्र फिजा में साँस ले रहे है तो यह इन दोनों के ही प्रतिबद्ध प्रयास से ही हो पाया है। विवेकानंद सांस्कृतिक जागरण के उन्न्यक थे, तो गाँधी राजनीतिक स्वतंत्रता के पुरोधा। विवेकानंद और गाँधी जी के बीच एक ऐसी तारतम्यता है, जो इस देश को सांस्कृतिक जाग्रति से लेकर राजनीतिक स्वतंत्रता तक ले आती है।

स्वामी विवेकानंद और महात्मा गाँधी दोनों का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ। ये दोनों विचारक वैदिक परंपरा के परिवारों में उत्पन्न हुए। अतः ये कभी भी वैदिक परम्परा के प्रभाव से मुक्त नहीं हो सके। भारत में उत्पन्न कुछ अन्य परम्पराओं को भी आदर की द्रष्टि से देखने वाले इन विचारकों ने वैदिक परम्पराओं को जीवन में उतारने की चेष्टा की। 'सर्वभूत हितेरतः' का आदर्श सामने रखकर इन्होने सुषुप्त भारतीय जनमानस को झकझोरा। गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारत को मुक्ति दिलाने का प्रयास किया। इन महान विचारकों के लक्ष्य समान प्रतीत होते हुए उन पर पहुँचने की विधियो के सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है। समकालीन भारतीय विचारकों में गाँधी के अलावा जितने भी दार्शनिक हुए वे अधिकतर शैक्षणिक प्रतीत होते है लेकिन विवेकानंद और गाँधी का चिन्तन शैक्षणिक होने की अपेक्षा मनुष्य के दुखों से अधिक सम्वन्धित प्रतीत होता है।

सन्दर्भ सूची

[1]. विवेकानंद साहित्य, अष्टम खंड ६।
[2]. Gandhi , M.K. , The suprime power , p-55.
[3]. Hingorani , anand T., The suprime power.
[4]. Young india .
[5]. हरिजन।
[6]. Dhiman , O.P.,Gandhian philosophy , a critical and comparative study (ambala cantt, Indian publication 1972).
[7]. Datta, D.M. the philosophy of Mahatma Gandhi.
[8]. वी.एस. नरवणे, आधुनिक भारतीय चिन्तन पृ. १०३ ८
[9]. विवेकान्द साहित्य, दशम खण्ड ८
[10]. Gandhi & autobiography .
[11]. Shukla, C.S. conversation of Gandhi ji.
[12]. गाँधी मोहनदास करमचन्द अनासक्तियोग (नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन १९५७)
[13]. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय पृ.६२१
[14]. मजुमदार धीरेन्द्र, बुनियादी शिक्षा पद्धति (वाराणसी, सर्वसेवासंघ प्रकाशन १९६२ पृ. ६३)